

सप्तमी विक्रि - 2

पात्रे समितादमश्च । स्तै निपालनैक्यै ।
 पात्रे समिताः भोजनसमम एव सङ्गताः,
 न तु कार्ये । गृहेश्वरः । गृहे नृणां । आकृति
 गणोऽयम् । प्रकारैः क्वधारणाव्यः । तेनैषां
 समासान्तरे व्यक्तता प्रवेशो न । परमा
 पात्रे समिताः

पूर्वकाले क्व सर्वजरत्पुराणुनवकेवल्याः
 समानाधिकरणेन । विशेषां विशेष्येण -
 इति सिद्धे पूर्वनिपातनियमाद्य सूत्रम् ।
 एक शब्दस्य । दिक्संख्ये संज्ञायाम् ।
 इति नियमवाचनार्थं च । पूर्व स्थातः
 पश्चादनुलिप्तः । एकस्यः स्थातानुलिप्तः ।
 एकनाथः । सर्वभासिकाः । जरमभासिका ।
 पुराणभासिकाः । नवदाकाः । केवलवमा
 करणाः

दिकसंख्ये संज्ञायाम् । समानाधि
 करणम् । इत्यापादपरि समाप्तेराधिकारः
 संज्ञायामेवेति नियमाद्य सूत्रम् । पूर्वेषु
 कामशरी सप्तम्यः । नेह, उत्रस वृत्ताः । पर्य

ब्राह्मणाः
 संज्ञा के विक्रम में दिशावाचक
 और दैर्घ्यावाचक सुवन्त का समानाधिकरण
 वाले सुवन्त (जिसका आकार सुप्ता
 ही है) के साथ समास होता है और-

इस समास को तत्पुरुष कहते हैं। उदाहरण के

लिए पूर्वाय इषुकामशशी च। - इस
विशेष में दिशावाचक सुवन्त 'पूर्वा'
का समानाधिकरण वाले सुवन्त 'इषुकामशशी'
के साथ प्रकृत सूत्र से समास होकर 'पूर्व-
इषुकामशशी' रूप बनता है। यह प्राचीन अम-

विशेषक संज्ञा है। इस प्रकार 'सप्त-पत्'
श्लेषमः - इस विशेष में 'सप्त' संज्ञावाचक
सुवन्त 'सप्त' का समानाधिकरण वाले
सुवन्त 'श्लेषमः' के साथ समास हो

'सप्तश्लेषमः' रूप सिद्ध होता है।
संज्ञा में ही दिशावाचक और
संज्ञावाचक पदों का समास होता है,

अल्पता नहीं। उदाहरण के लिए
'उत्तरा वृद्धाः' में दिशावाचक 'उत्तरा'
के सुवन्त होने पर ही संज्ञा न होने से
समास नहीं होता।